भाषा की परिभाषा एवं विशेषताएँ

- डॉ. नवीन नन्दवाना

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
(राजस्थान) 313001

भाषा

- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते उसे जन्म से मृत्युपर्यन्त अपने विचारों एवं भावों आदि को अपने परिवार जनों, मित्रों एवं संसार के अन्य प्राणियों के सम्मुख व्यक्त करना पड़ता है एवं दूसरों के विचारों को भी जानना-समझना पड़ता है। विचार विनिमय की यह क्रिया अनवरत जारी रहती है।

अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य कई तरीकों को अपनाता है –

- कभी मौखिक होती है तो कभी लिखित । कभी-कभी यह इशारों या संकेतों में। सभ्य एवं शिक्षित समाज में निमंत्रण पत्र देकर बुलाया जाता है। देहात के अनपढ़ लोग यही कार्य हल्दी या सुपारी बाँटकर करते हैं।
- बिहारी के नायक नायिका 'तो 'भरै भौन में करत है, नैनन ही सों बात'
- रेलवे का कार्य झंडियों के संकेत मात्र से ही हो जाता है।

अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य कई तरीकों को अपनाता है -

- कई बार संकेत इतने तक होते हैं कि यदि मैं चाय पिलाऊँ तो समझना काम नहीं हुआ और कॉफी पिलाऊँ तो हो गया।
- कई बार तो अफसरों या नेताओं के हस्ताक्षर करने के तरीके या स्याही के रंगमात्र से उसका सहायक कर्मचारी यह जान लेता है कि किसी व्यक्ति विशेष का कार्य करना है या नहीं।

भाषा की विविध परिभाषाएँ

- भाषा शब्द 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है- बोलना या कहना। अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाए।
- भाषा वैज्ञानिक डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार -
“भाषा मानव उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं।”

भाषा की विविध परिभाषाएँ

- प्लेटो के अनुसार –
- “विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है, तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।”

संस्कृत आचार्य दण्डी ने भाषा को इस प्रकार समझाया-

- 'काव्यादर्श' में भाषा को इस प्रकार समझाया है-

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

अर्थात् यह सम्पूर्ण त्रिभुवन अंधकारपूर्ण हो जाता,
यदि 'शब्द' नाम की ज्योति इस सम्पूर्ण विश्व को
प्रकाशित न कर देती।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (1) भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है –
- कुछ लोग यह मानते हैं कि भाषा पैतृक सम्पत्ति है। जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। यदि किसी भारतीय बच्चे को जन्म लेने के साथ ही यदि फ्रांस में पाला जाए तो वह हिन्दी भाषा समझ और बोल नहीं सकेगा। फ्रेंच ही उसकी मातृभाषा बन जाएगी।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (2) भाषा अर्जित सम्पत्ति है- उपर्युक्त उदाहरण इस बात को स्पष्ट करता है कि भाषा, व्यक्ति अपने समाज या वातावरण से सीखता है। उस बालक का हिन्दी न जानकर फ्रेंच जानना इस बात का उदाहरण है कि भाषा का अर्जन किया जाता है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (3) भाषा आद्यन्त सामाजिक वस्तु है –
- जब हम इस बात से सहमत हैं कि भाषा अर्जित सम्पत्ति है तो व्यक्ति इसका अर्जन कहाँ से करता है ?
इस बात का एक मात्र उत्तर यही है कि व्यक्ति इसे समाज से सीखता है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (4) भाषा परंपरा है, व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है, उसे उत्पन्न नहीं कर सकता-
- भाषा परंपरा से चली आ रही है, व्यक्ति उसका अर्जन परम्परा और समाज से करता है। व्यक्ति उसमें परिवर्तन तो कर सकता है किंतु उसे उत्पन्न नहीं कर सकता। अतः भाषा का जनक समाज है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (5) भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है - भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा ही होता है। माँ शिशु के समक्ष जिन शब्दों का उच्चारण करती है। वह शिशु भी धीरे-धीरे उसे स्वयं कहने का प्रयास करता है। प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने अनुकरण को मनुष्य का सबसे बड़ा गुण माना है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (6) भाषा चिरपरिवर्तनशील है - किन्हीं दो व्यक्तियों की भाषा एक-सी नहीं होती है। अनुकरण प्रिय होने के कारण व्यक्ति किसी और की भाषा का अनुकरण करता है तथा शारीरिक एवं मानसिक भिन्नता के कारण प्रत्येक अनुकरण में कुछ न कुछ भिन्नता आ जाना स्वाभाविक हैं। ये ही छोटी-छोटी विभिन्नताएँ भाषा में परिवर्तन उपस्थित करती है। इसके अतिरिक्त प्रयोग से घिसने एवं बाहरी प्रभावों से भी परिवर्तन होता है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (7) भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं होता है - भाषा जब परिवर्तनशील है तो उसका कोई अंतिम स्वरूप ही नहीं सकता। वस्तु का अंतिम स्वरूप हो सकता है पर भाषा कोई अंतिम स्वरूप नहीं होता। हिन्दी का प्राण है- परिवर्तनशीलता। जो समय के साथ परिवर्तनशील नहीं होता है, वह काल का ग्रास बन जाता है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (8) प्रत्येक भाषा की अपनी अलग संरचना होती है -
किन्हीं दो भाषाओं का ढाँचा पूर्णतया एक-सा नहीं होता। उनमें ध्वनि, शब्द, रूप वाक्य या अर्थ आदि में किसी एक स्तर पर या एकाधिक स्तर पर अन्तर अवश्य होता है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (9) प्रत्येक भाषा की एक भौगोलिक एवं ऐतिहासिक सीमा होती है – हर भाषा की एक भौगोलिक सीमा होती है, उस सीमा के बाहर उस भाषा-रूप में परिवर्तन आने लगता है। ब्रज क्षेत्र, खड़ी बोली क्षेत्र, मेवाड़ी, बागड़ी, मालवी, हाड़ौती, हूँडाड़ी, अवधी आदि इस भौगोलिक आधार पर बने क्षेत्र हैं।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- **ऐतिहासिक सीमा** - भौगोलिक सीमा की भाँति भाषा की एक ऐतिहासिक सीमा भी होती है। कोई भी भाषा इतिहास के एक निश्चित काल से प्रारंभ होकर एक निश्चित काल तक व्यवहृत होती है। उस काल के बाद की या पहले की भाषा, उस भाषा से भिन्न होती है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (10) भाषा की धारा स्वभावतः कठिनता से सरलता की ओर जाती है- मनुष्य स्वभावतः कम से कम प्रयास में अधिक से अधिक लाभ लेना चाहता है। इसी कारण वह भाषा को भी सरल बनाने हेतु प्रयासरत रहता है। इसी कम प्रयास के चलते वह 'सत्येन्द्र' को 'सतेन्द्र' और फिर 'सतेन' कहने लगता है और आखिर में वह उसे 'सति' कहकर ही काम चलाने लगता है।

भाषा की प्रकृति और विशेषताएँ

- (11) भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती है - भाषा संयोग से वियोग की ओर जाती है। संयोग का अभिप्राय मिला होने से है। जैसे-राम गच्छति। वियोगावस्था में ये परसर्ग अलग होने लगे जैसे- 'राम जाता है।' इस प्रकार भाषा वियोगावस्था की ओर बढ़ती है।

धन्यवाद !